स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय,नांदेड

मानव्य विद्याशाखा अंतर्गत पी-एच्.डी. (हिंदी) उपाधि

हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबंध की रूपरेखा

“रामदरश मिश्र के उपन्यासों के शिल्पविधि का अध्ययन”

शोधछात्र

राजकुमार अर्जुनराव बिरादार

एम.ए., एम.एड., एम.फिल.

शोधनिर्देशक

डॉ.संजय नामदेव गडपायले

एम.ए. (हिंदी), बी.एड., पी-एच्.डी.

सहाय्यक प्राध्यापक,

हिंदी विभागाध्यक्ष

माधवराव पाटील महाविद्यालय, पालम

जि.परभणी

अनुसंधान केंद्र

महाराष्ट्र उदयगिरी महाविद्यालय, उदगीर

जून - 2017

“रामदरश मिश्र के उपन्यासों के शिल्पविधि का अध्ययन”

भूमिका :

किसी भी साहित्यिक विधा में उसके शिल्प का बड़ा महत्त्व होता है। दरअसल उपन्यास के शिल्प के सम्बन्ध में तो अजीब बात यह है कि उसका शिल्प निरंतन विकासमान रहता है। उपन्यास के शिल्प में जितने नये प्रयोग हुए हैं, शायद अन्य किसी विधा में नहीं। हिंदी उपन्यास का शिल्प अपने प्रारंभिक काल से लेकर आज तक प्रयोग के अनेक मोड़ों से गुजरते हुए निरन्तर प्रवाहमान है। कहना न होगा कि शिल्प की सफलता रचना की उत्कृष्टता एवं सफल कलात्मकता के लिए अपरिहार्य है। मानवजीवन से सीधा एवं व्यापक सम्बन्ध रखने एवं कलात्मक विधा के रूप में प्रतिष्ठित हो जाने के कारण कथा-साहित्य में विशेषकर उपन्यास में शिल्पविधि का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

रामदरश मिश्र के उपन्यास ‘पानी के प्राचीर’ और ‘जल टूटता हुआ’ और दोनों ही अपने रुपबन्ध में उपन्यास है और दोनों की ही वस्तु संयोजना में कथानक बिखराव विद्यमान है। इन उपन्यासों में मिश्र के परस्परागत कथानक विन्यास को तोड़कर उसकी एक अलग बुनावट प्रस्तुत की है। ऐसी अवस्था में पात्र जल्दी-जल्दी एक दूसरे से गुजारता हुआ चलता रहता है। किसी एक पात्र पर उनका फोकस नहीं होता हर उपन्यास में तमाम पात्र एक साथ आते हैं ।

रामदरश मिश्र के उपन्यासों में ‘सूखता हुआ तालाब’ अपनी कथा में एक कसाव लिए हुए भी आंचलिक है। गाँव में फैली भ्रष्ट राजनीति, स्वार्थ एवं पद-लोभी प्रवृत्ति, अनैतिक स्थितियाँ, सामाजिक नैतिक मूल्य-विघटन आदि सभी का इस उपन्यास के शिल्प विस्तार से चित्र खींचा गया है। यहाँ भी बिखराव की स्थिति वही है जो ‘पानी के प्राचीर’ अथवा ‘जल टूटता हुआ’ में है। यहाँ अंचल विशेष की कथा उपन्यास के छोटे आकार के कारण अधिक विस्तार नहीं पा सकी है, परन्तु मिश्र ने पैनी दृष्टि ग्रामीण जीवन में लगे घूनों

को चून-चूनकर प्रस्तुत करने में असफल रही है। रामदरश मिश्र की यथार्थवादी दृष्टि शहर और ग्राम दोनों की जीवन स्थितियों का सूक्ष्म चित्रण करती है।

शिल्प की दृष्टि से 'अपने लोग' एक बृहद उपन्यास है। इसकी रचना प्रक्रिया उनके अन्य उपन्यासों से भिन्न है। 'अपने लोग' तक आते-आते मिश्र के सामाजिक, वैचारिक दृष्टिकोण में गुणात्मक अन्तर है। रामदरश मिश्र के उपन्यासों में बिम्बों की जो ताजगी और संश्लिष्टता हमें 'जल टूटता हुआ' में प्राप्त होती है वैसी अन्य उपन्यासों में नहीं। मिश्र के उपन्यास शिल्प में परिवर्तनशील का सत्य उनकी सृजन को सतत कथ्य की नयी आशा और शिल्प की सहज नवीनता प्रदान करता रहा है।

रामदरश मिश्र कृत 'अपने लोग' पूर्णत: आंचलिक उपन्यास नहीं है। कुछ हद तक ही वह आंचलिक है। वह गोरखपुर शहर को केंद्रित करके लिखा गया है। गोरखपुर का कोई भाग, कोई घटना या किसी वर्ग का पात्र मिश्र की निगाह से नहीं बच पाया। 'अपने लोग' में एक स्थानीय भूगोल और स्थानीय घटनाओं को पूरी सच्चाई के साथ जीवन्त रुप में प्रस्तुत किया है। इसके अतिरिक्त 'आकाश की छत' उपन्यास का कथानक एक ओर शहर के जीवन से सम्बन्धित है, तो दूसरी ओर ग्रामीण जीवन से। इस प्रकार यह भौगोलिक स्थल के वातावरण शिल्प दिखाई देता है।

रामदरश मिश्र ने उपन्यास का नायक तथा उससे सम्बन्धी तमाम छोटी-छोटी कथाओं, प्रसंगों, संदर्भों की सृष्टि की है। साथ ही कथा निर्माण में परिवेश की सर्जनात्मक भागीदारी भी है। उपन्यासों में परिवेश का विधान मात्र पात्रों और कहानी की पृष्ठभूमि के रूप में नहीं हुआ है, बल्कि उसके माध्यम मिश्र कथानक का विन्यास भी करता है। कथानक के निर्माण में परिवेश का विशेषत: प्राकृतिक परिवेश का बहुत बडा योगदान है।

कथानक के निर्माण में परिवेश का सर्जनात्मक उपयोग भी मिश्र ने किया है। प्रकृति का भी कथानक के निर्माण में और पात्रों की मन-स्थिति को उजागर करने वाले एक सशक्त माध्यम के रूप में मिश्र ने उपयोग किया है।

मिश्र जी ने विषय वस्तु के अनुरूप शिल्प में अनेक प्रयोग किए है किंतु इस पर अब तक स्वतंत्र शोध कार्य नहीं हुआ है उसी की पुर्ति हेतु अपने शोध कार्य के लिए “रामदरश मिश्र के उपन्यासों के शिल्पविधि का अध्ययन” इस शीर्षक का चयन किया है।

विषय चयन की प्रेरणा :

मैं एम.फिल. उपाधि के लिए “रामदरश मिश्र कृत उपन्यास ‘सूखता हुआ तालाब’ में आँचलिकता” विषय पर लघुशोध प्रबंध का कार्य पूर्ण किया। मिश्र के उपन्यासों का अध्ययन करते हुए मुझे प्रतित हुआ कि मिश्र के उपन्यासों के शिल्प पर पी-एच्.डी. के लिए शोधप्रबंध प्रस्तुत किया जा सकता है। गुरुवर्य शोध-निर्देशक डॉ.मनोहर भंडारे से कई बार विचार-विमर्श किया और मेरी जिज्ञासा को पहचानकर उन्होंने शोध कार्य के लिए प्रेरित किया। उसकी फलश्रुति “रामदरश मिश्र के उपन्यासों के शिल्पविधि का अध्ययन” नामक विषयक का चयन हुआ।

विषय का महत्त्व :

शोध की दृष्टि से रामदरश मिश्र के उपन्यासों के शिल्प का अध्ययन होना समय की माँग है। क्योंकि उसपर स्वतंत्र गंभीर चिंतन नहीं हुआ। मिश्र जी ने शिल्प में जो प्रयोग किए उसका अध्ययन अपना महत्त्व रखता है। इन उपन्यासों में जिस भाषा का प्रयोग किया है उसका अध्ययन होना चाहिए क्योंकि भाषा केवल भाषा नहीं होती बल्कि उसमें संस्कृति छिपी होती है। अर्थात लेखकीय भाषा को समझना शोध का अपना महत्त्व है। भविष्य में शोधार्थी के लिए प्रस्तुत शोध उपयोगी सिद्ध होगा।

शोध विषय के उद्देश्य :

1) रामदरश मिश्र कृत उपन्यासों के कथा-शिल्प को समझना।

2) रामदरश मिश्र कृत उपन्यासों के भाषाशिल्प का अध्ययन करना।

3) रामदरश मिश्र के उपन्यासों के चरित्र शिल्प का महत्त्व समझना।

4) रामदरश मिश्र के उपन्यासों में देश, काल तथा वातावरण की महत्ता को समझना।

5) रामदरश मिश्र के उपन्यासों की रचना प्रक्रिया को समझना।

6) रामदरश मिश्र के लेखकीय प्रभाव को समझना।

7) रामदरश मिश्र के उपन्यासों के शिल्पविधि के व्यावहारिक पक्ष को समझना।

विषय की मौलिकता :

मेरी जानकारी के तहत प्रस्तुत शोध के पूर्व इस शीर्षक पर किसी ने भी अनुसंधान नहीं किया है। इस दृष्टि से प्रस्तुत विषय की अपनी मौलिकता है। अतः इस शोध में प्रस्तुतीकरण और विवेचन की दृष्टि से सर्वथा जो मौलिक तथ्य प्राप्त होंगे वे दर्ज किये जायेंगे ।

अंतर्विद्याशाखीय अध्ययन :

शोध कार्य करते समय अंतर्विद्याशाखीय अध्ययन करना अनुसंधान के लिए आवश्यक माना जाता है। प्रस्तुत शोध का विषय कला से जुडा है। इस कारण शिल्पकला, चित्रकला तथा अन्य कलाओं का पारस्परिक सम्बन्ध प्रस्तुत विषय में आयेगा। अतः प्रस्तुत शोध प्रबंध अंतर्विद्याशाखीय अध्ययन में आता है।

पूर्ववर्ती शोध कार्य :

इससे पूर्व रामदरश मिश्र के साहित्य पर जो शोध कार्य हुआ है वह निम्नांकित है-

1) शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के शिवाजी नाले नामक शोध छात्र ने “रामदरश मिश्र के कथा साहित्य में चित्रित ग्राम जीवन” पर पी-एच्.डी. की उपाधि प्राप्त की है।

2) मुम्बई विश्वविद्यालय, मुंबई के सुरेन्द्र प्रतापसिंह नामक शोध छात्र ने “रामदरश मिश्र के व्यक्तित्व एवं कृतित्व” पर पी-एच्.डी. उपाधि प्राप्त की है।

3) केरल विश्वविद्यालय, केरल के वीणादेवी के एल. नामक शोधछात्रा ने “रामदरश मिश्र के उपन्यासों में नारी” इस पर पी-एच्.डी. उपाधि प्राप्त की है।

4) दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली के राजकुमारी नामक शोधछात्रा ने “रामदरश मिश्र के उपन्यासों में गाँव” पर पी-एच्.डी. उपाधि प्राप्त की है।

इस सब शोध-प्रबंधों में मिश्र के साहित्य पर विभिन्न पहलुओं से शोध कार्य किया है। लेकिन मैं अपने पूर्ववर्ती शोध प्रबंधों से भिन्न दृष्टिकोण अपनाकर मिश्र के उपन्यासों के शिल्पविधि का अनुसंधान करने का प्रयास है।

शोध कार्य में समयानुकूल परिवर्तन या बदलाव किया जा सकता है।

शोध कार्य पद्धति :

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए विविध साहित्यिक ग्रंथों तथा संदर्भिय ग्रंथों का उपयोग किया जायेगा। इस अनुसंधान के लिए ऐतिहासिक, वैज्ञानिक, सैद्धांतिक, प्रायोगिक तथा सर्वेक्षणात्मक पद्धति का प्रयोग किया जायेगा।

विषय की व्याप्ति और सीमा :

शोधकार्य सुचारु रुप से होने के लिए उसकी अपनी सीमा और सुनियोजन होना चाहिए तभी वह कार्य सफल होगा। मैंने रामदरश मिश्र के उपन्यासों के शिल्प तक ही विषय को सीमित रखा है। परन्तु रामदरश मिश्र के शिल्प का सूक्ष्म और गंभीर अध्ययन करना आवश्यक समझा है। रामदरश मिश्र ने अब तक ग्यारह (11) उपन्यास लिखे हैं। इन उपन्यासों के शिल्प का सूक्ष्मता, प्रमाणता और विश्सनीय शोध परक अध्ययन करना शोध की व्याप्ति है।

शोध प्रबंध की दृष्टि से मैंने प्रस्तुत शोध को षष्ठ्म (6) अध्यायों में विभाजित किया है, जो निम्नांकित हैं-

प्रथम अध्याय :

उपन्यास और शिल्पविधि

1.1 शिल्पविधि व्युत्पत्ति तथा अर्थ

1.2 शिल्प : प्रयोग और अर्थ (संस्कृत तथा हिंदी साहित्य में)

1.3 शिल्प : प्रयोग और अर्थ (अंग्रेजी साहित्य में)

1.4 शिल्पविधि : स्वरूप

1.5 शिल्पविधि : परिभाषा

1.6 शिल्पविधि का महत्त्व

1.7 शैली और शिल्प

1.8 शिल्पविधि की परिवर्तनशीलता

1.9 शिल्पविधि के तत्त्वों का विश्लेषण

- 1.9.1 कथानक संघटना
- 1.9.2 चरित्र-निर्माण
- 1.9.3 देशकाल संयोजन
- 1.9.4 भाषाशैली अभिव्यक्ति
- 1.9.5 आंतर सामंजस्य और संघटना
- 1.9.6 उद्देश्य कथन

1.10 मूल्य-निर्धारण में शिल्प की भूमिका

1.11 शिल्प की अनिवार्यता

1.12 हिन्दी उपन्यासों के शिल्पविधि का विकास

1.13 प्रारंभिक उपन्यासों का शिल्प

1.14 प्रेमचन्दयुगीन उपन्यासों का शिल्प

1.15 प्रेमचन्दोत्तर उपन्यासों का शिल्प

1.16 स्वातंत्र्योत्तर युगीन उपन्यास का शिल्प

1.17 रामदरश मिश्र के उपन्यासों का शिल्प

द्वितीय अध्याय :

रामदरश मिश्र के उपन्यास : कथा शिल्प के संदर्भ में

2.1 दृष्टिकोण, उद्देश्य और कथा विन्यास

2.2 कथानक का प्रारंभ

2.3 कथा विकास

2.4 कथा का उपसंहार

2.5 कथा का यथार्थवादी स्वरूप

2.6 कथावस्तु संयोजन शिल्प

2.7 कथानक में बिखराव

2.8 संयोग तत्त्व

2.9 उद्घाटन

2.9.1 विचारात्मक

2.9.2 इतिवृत्तात्मक

2.9.3 नाटकीय

2.10 कथावस्तु में आदि परिस्थितियाँ

2.11 घटनात्मकता और मानसिकता

2.12 चरम सीमा

2.13 केन्द्रबिंदु

2.14 उपन्यासों का उपसंहार

2.15 अनुपात और संगठन

2.16 कथारस, औत्सुक्य और पूर्वाभास

2.17 परिवर्तन और कार्य

2.18 कथानकों के आकार

2.19 कथानकों के प्रकार

2.20 उपन्यासों के शीर्षक और कथानक

तृतीय अध्याय :

रामदरश मिश्र के उपन्यास : चरित्र शिल्प के संदर्भ में

3.1 पात्र सृष्टि

3.2 पात्र संख्या

3.3 पात्रों के वर्ग

3.4 नायक-नायिका

3.5 सहनायक-सहनायिका तथा प्रधान पात्र

3.6 चरित्र शिल्प का महत्त्व

3.7 चरित्र-चित्रण की विधि

3.8 पात्र कल्पनागत विशिष्ठता

3.9 पात्रों का विशिष्ठ वर्गीय स्वरुप

3.10 चरित्र चित्रण प्रविधियाँ

3.11 नाटकीय चित्रण प्रविधियाँ

3.12 समूह वार्ता

3.13 समूह पात्र के चरित्र-चित्रण

3.14 पत्र और डायरी के द्वारा चरित्र-चित्रण

3.15 पात्रों का प्रथम प्रवेश

3.16 अनुभव द्वारा चरित्र-चित्रण

3.17 हास्य व्यंग द्वारा चरित्र-चित्रण

3.18 अंतर्द्वंद्व के चित्रण द्वारा चरित्र-चित्रण

3.19 अंतरंग व बहिरंग चित्रण प्रविधियाँ

3.20 अंतर्विवादों के द्‌वारा

3.21 स्वप्नों के द्‌वारा

3.22 आदर्शवादी पात्र

3.23 विकासशील पात्र

3.24 सपाट चरित्र

3.25 गुढ चरित्र

3.26 पात्रों का स्वगत कथन

3.27 कार्यों द्‌वारा पात्रों का चरित्र-चित्रण

3.28 दूसरों द्‌वारा पात्रों का चरित्र चित्रण

चतुर्थ अध्याय :

रामदरश मिश्र के उपन्यास : वातावरण शिल्प के संदर्भ में

4.1 वातावरण का अर्थ, परिभाषा

4.2 उपन्यासों में देश, काल और वातावरण की महत्ता

4.3 भौगोलिक परिवेश

4.4 प्राकृतिक परिवेश

4.5 कालिक परिवेश

4.6 सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश

4.7 मनोविश्लेषणात्मक और वातावरण शिल्प

4.8 आन्तरिक वातावरण

4.9 मनस्थिति द्‌वारा वातावरण

4.10 बाह्य वातावरण

4.11 उपन्यास में वातावरण का महत्त्व

4.12 उपन्यास और वातावरण

4.12.1 सामाजिक

4.12.2 राजनैतिक

4.12.3 आर्थिक

4.12.4 सांस्कृतिक

4.12.5 प्राकृतिक

4.13 स्थानीय परिवेश अथवा दृश्यबन्ध

4.14 स्थितिया-परिस्थितियाँ

4.15 पारिवारिक सम्बन्धी स्थितियाँ

4.16 राहत, सुख, सन्तोष

4.17 आशा, सुखद संभावना

4.18 रहस्यमय आश्चर्य और भय

4.19 उत्साह, उल्लास और सात्त्विकता

4.20 श्रद्धामय और पवित्रता

4.21 निराशा, उदासी

4.22 हास्यमय, हल्का-फुल्कापन

4.23 करुणा और शोक

4.24 आक्रोश, तिलमिलाहट

4.25 करुण व्यंग्य, विडम्बनात्मक स्तब्धता

4.26 वातावरण प्रधान उपन्यास

पंचम अध्याय :

रामदरश मिश्र के उपन्यास : भाषा शिल्प के संदर्भ में

5.1 भाषा और उपन्यास शिल्प

5.2 उपन्यास और भाषा

5.3 मिश्र की भाषा सम्बन्धी मान्यताएँ

5.4 मिश्र के उपन्यासों की भाषा का स्वरुप

5.5 भाषिक संरचना का शिल्प

5.6 भाषागत प्रयोग

5.6.1 तत्सम

5.6.2 तद्‌भव

5.6.3 देशी

5.6.4 विदेशी

5.7 आवृत्तिमूलक शब्द

5.8 समानार्थी शब्द

5.9 ध्वनिगत प्रयोग

5.10 पात्रानुकूल भाषा

5.11 गालियाँ

5.12 क्रिया का पूर्ववर्ती और कारकादि का परिवर्ती प्रयोग

5.13 निपात प्रयोग

5.14 संयोजक विहीन पद प्रयोग

5.15 विस्मयादि बोधक शब्द प्रयोग

5.16 मुहावरे और लोकोक्ति का प्रयोग

5.17 सुक्ति प्रयोग

5.18 शैली

5.18.1 वर्णनात्मक

5.18.2 विश्लेषणात्मक

5.18.3 आत्मकथात्मक

5.18.4 पत्रात्मक

5.18.5 फ्लैश (पूर्वदीप्ति)

5.18.6 चेतनात्मक

5.18.7 मनोविश्लेषणात्मक

5.18.8 चित्रात्मक

5.18.9 वैचारिक

5.18.10 प्रतिकात्मक

5.18.11 विवरणात्मक

5.18.12 चिंतनात्मक

5.18.13 संस्मरणात्मक

5.18.14 संवादात्मक

5.19 डायरी

5.20 फैन्टसी

5.21 टेलिफोन

5.22 सीधी-साधी सरल

5.23 विज्ञापन

5.24 शब्द शक्ति

5.25 प्रतिमा

5.26 बिम्ब

5.27 चरित्र

5.28 परिवेश

5.29 अलंकारों के विशिष्ट उदाहरण

5.30 भाषा शिल्प

षष्ठ्म अध्याय :

मूल्यांकन एवं निष्कर्ष

इस अध्याय में सभी अध्यायों का मूल्यांकन कर प्राप्त निष्कर्ष दर्ज किए जाएँगे।

- **आधारग्रंथ सूची**

1) रामदरश मिश्र - ‘पानी के प्राचीर’, हिन्दी प्रचार संस्थान, वाराणसी, 1961

2) रामदरश मिश्र - ‘जल टुटता हुआ’, हिन्दी प्रचार संस्थान, वाराणसी, 1969

3) रामदरश मिश्र - ‘बीच का समय’, राधाकृष्ण प्रकाशन, वाराणसी, 1970

4) रामदरश मिश्र - ‘सुखता हुआ तालाब’, नॅशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, 1972

5) रामदरश मिश्र - ‘अपने लोग’, नॅशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, 1976

6) रामदरश मिश्र - ‘रात का सफर’, राधाकृष्ण प्रकाशन, वाराणसी, 1976

7) रामदरश मिश्र - ‘आकाश की छत’, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1979

8) रामदरश मिश्र - ‘बिना दरवाजे का मकान’, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 1984

9) रामदरश मिश्र - ‘दूसरा घर’, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1986

10) रामदरश मिश्र - ‘थकी हुई सुबह’, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, 1994

11) रामदरश मिश्र - ‘बीस बरस’, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1996

- संदर्भ ग्रंथ सूची
- परिशिष्ठ

शोधछात्र *शोध-निर्देशक*

राजकुमार अर्जुनराव बिरादार **डॉ.संजय नामदेव गडपायले**